श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ७

दिसंबर 2024

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और इनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है, जोड़ने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरूरी है, उसके पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरूरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. मेरु पर्वत की तलहटी में..... नामक वन है।
२. गति के किस भेद में उत्पन्न होना यह निश्चित करने वाला कर्म है ..... ।
३. मैं सिनेमा में अभिनेता, अभिनेत्री या अन्य पात्रो का..... नहीं करुंगा।
४. परमात्मा के शासन का श्रावक किसी के भी समाने हाथ पसारता नहीं है, वह तो स्वयं ही अपने ..... की व्यवस्था करता है।
५. जो आपत्ति की ..... से मुक्त तथा भक्ति से युक्त है।
६. ..... आत्माका गुण होने से ज्ञानावरणीय एवं दर्शनावरणीय के क्षमोपराम से होता है।
७. जो ब्राह्मण..... के मानव का अन्न खाता है वो नारकी होता है।
८. सेठ ने विचार किया कि "उसकी जितनी आमदनी होगी वह सब ..... में खर्च करना।
९. ..... के उपर विद्याधर मनुष्यो की एवं आभियोगिक देवों की दो-दो श्रेणिया है।
१०. मैं पशु-पक्षी तथा मानव के ..... बेचने का धंधा नहीं करुंगा।
११. मणि और सुवर्ण की झूलती मेखलाओं से जिनके..... सुशोभित हैं।
१२. ऋणधारक ने अपना ऋण चुकाने के लिये लेनदार के यहां चाकर बनकर भी..... कर देना चाहिये।
१३. शरीर को हानि पहुंचाकर भयंकर वेदना पहुंचाये वो सब..... कर्म जानना।
१४. ..... की भांति पारदर्शी जिस शरीर का निर्माण करते है, उसे आहारक शरीर कहते है।
१५. जहां अपना..... सुख से साध सके और पैदाश अच्छी हो, वहां व्यापार करना चाहिये।
१६. ..... से बहुत सारे जीवो के घात का निमित्त बनते है।
१७. चौथे खंड को जीतकर..... को अपने रथ की नोक से तीन बार स्पर्श करता है।
१८. चिकने रस वाली वस्तुओं के जंहा बर्तन खुले रह जाय वहां भी छोट-बडे जीव आकर पड़ते है ये..... है।
१९. औदारिक पुद्गलो को एकत्र करके प्रदान करने वाला..... नाम कर्म है।
२०. आठ कर्म पुद्गलो के शरीर को..... कहते है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. कौनसी नगरी बहुत वर्षो से विद्वानों की खान के रुप में प्रसिद्ध है ?
२. श्रावको को बहुधा किसके साथ व्यापार करना चाहिये ?
३. अंग के भेदो, उप-अवयवो को क्या कहते है ?
४. नगरो की पंक्ति या समूह यानि क्या ?
५. सारे शस्त्रो में मुख्य शस्त्र क्या है ?
६. सुर,असुरो के शरीर किस भाव से झुके हुए है ?
७. मैं प्रतिक्षण पुद्गल के उपचय और अपचय से बढता घटता हुं ?
८. मनोरंजन की खातिर श्वान का पालन पोषण करना कौनसा कर्म है ?
९. वीर प्रभु के गणधरो में सबसे ज्यादा केवली पर्याय किसका है ?
१०. चतुरिन्द्रिय को तीन इंद्रियों के अतिरिक्त कौनसी इन्द्रि अधिक होती है ?
११. किसमें ज्यादा कर्मबंध होता है ?
१२. अन्य वर्गणाओ की अपेक्षा मेरी वर्गणाये स्थूल है ?
१३. व्यापार के लिये क्या अति आवश्यक है ?
१४. जमीन पर के शिखर यानि क्या ?
१५. चक्रवर्ती दूसरे क्रम पर कौनसे द्वीप को जीतता है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) प्रेत्य २) उवंग ३) सतिलय ४) विज्जाहर ५) जुत्ताणं ६) हुलिअ ७) उरल ८) दुरुत्तरसयं ९) पमुइआ १०) विहं
११) उत्तहकूडा १२) जाईओ १३) पिंडिय १४) वाणिज्जे १५) पमुइआ १६) ओराल १७) साडी १८) सहियाणं
१९) मीसया २०) पयाहिणं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) वैक्रिय	१) नाखून	६) ऋणानुबंध	६) यंत्रे पीलन
२) जलाशय	२) भावड शेठ	७) शिल्प	७) नारकी
३) घाणी	३) शाल्मलि	८) मिथ्यात्व मोहनीय	८) अकंपित
४) जयंति	४) अशुद्ध	९) गरुडवेग	९) भाटक
५) अंगोपांग	५) छपाई	१०) महाहिंसामय	१०) तीर्थ

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. २४ वैताढ्यों पर कितनी श्रेणियाँ है ?
२. आठ कर्म की कितनी प्रकृति सत्ता में होती है ?
३. अंकपित पंडित कितने वर्ष तक गृहस्थाश्रम में रहे ?
४. व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिये कितनी बातें ध्यान रखना चाहिये ?
५. कुवाणिज्य कितने है ?
६. भद्रशाल वन में कुल कितने भूमिकूट है ?
७. भावड़शेठ का दूसरा पुत्र कितनी सोनैया लेकर चलता बना ?
८. अंकपित गणधरने किस उग्र में निर्वाणपद पाया ?
९. अंगोपांग कितने शरीर में नहीं होते ?
१०. औदारिक, वैक्रिय और आहारक बन्धन नामकर्म का योग होने पर कुल कितने प्रकार के बन्धननामकर्म होते है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. नारकी एवं नरक है या नहीं इस बात की अकंपित पंडित को शंका थी ।
२. जीवात्मा को जब उपशम सम्यकत्व की उपलब्धि होती है, तब मिथ्यात्व मोहनीय के पुद्गल चार भागों में विभक्त हो जाते है ।
३. देवकुरु क्षेत्र में शाल्मलि वृक्ष उपर सात शाल्मलि कूट है ।
४. कार्मण शरीर देख सकते है, अदृश्य है, परंतु उसके परिणाम हम हर क्षण अनुभव करते है ।
५. मैं चौमासे में नया मकान नहीं बनाउंगा एंव बेचूंगा भी नहीं ।
६. मेखला याने सपाट प्रदेश, एक उत्तर तरफ दुसरा दक्षिण की ओर ।
७. सुर, असुर तीन बार प्रदक्षिणा देकर अत्यंत राग पूर्वक स्वयं के भवनों में वापस आते है ।
८. जिस जिस पदार्थ में बहुत जीव पडे उस पदार्थ का व्यापार करना चाहिए ।
९. त्रीन्द्रिय जाति प्रदान करने वाले कर्म को त्रिन्द्रियजाति नामकर्म कहते हैं ।
१०. ऋणसंबंध छोड ना दे और दोनों में से एक का आयुष्य पूरा हुआ तो भवांतर में दोनों में प्रेम वृद्धि होगी ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. वह तेना अपने मृत्यु के पहले वापिस आ जाय तो घरखर्च में नहीं वापरना अपितु संघ को सौंप देना ।
२. मैं चरबीवाले साबुन, टुथपेस्ट वगैरह का धंधा नही करुंगा ।
३. इस कुदरती घटना को गति कहते है, एक-एक गति में ले जाने वाला एक निश्चित कर्म होता है ।
४. नारकी तुरंत बाद के परलोक में वो नारकी होते नहीं है, पर दूसरे भव में जाते है ।
५. इसी तरह अन्य दो तीर्थो में भी अपनी आज्ञा स्थापित करता है ।
६. इसमें वनस्पति के जीव तथा उनपर आश्रित त्रस जीवो की अवश्य विराधना होती है ।
७. अपनी इच्छानुकूल काम करनो वाले एवं अनेक विद्याओं को धारण करनेवाले विद्याधर जाति के मनुष्य रहते है ।
८. पंद्रह कर्मादान का संपूर्ण त्याग करना चाहिये ।
९. भरत क्षेत्र में से लवण समुद्र में उतरना हो तो लवण समुद्र में प्रवेश के तीन स्थान है ।
१०. भवोभव में, अनार्थ देश में, पैसा कमाने की लालच से इन जीव ने अनेक बार कर्मादान में उद्यम किया है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जाति नामकर्म को संक्षिप्त में समझाइये ? २) प्रभु वीर ने अकंपित पंडित की शंका का समाधान कैसे किया ?
३. कर्मादान के बारे में समझाइये (नाम नहीं लिखना है) ? ४) उत्तम लेनदार कैसा होना चाहिये ?
५. विद्याधर मनुष्यो की श्रेणियों का वर्णन संक्षिप्त में कीजिये ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com